गुरु गोबिंद सिंह जी का विद्या दरबार

डॉ. हरमोहिंदर सिंह बेदी

पंजाब में गुरु दरबारी काव्य परंपरा गुरु गोबिंद सिंह जी के काल में चरमोत्कर्ष पर पहुँचती है। गुरु गोबिंद सिंह महान योद्धा के साथ-साथ महान कवि भी थे। उन्होंने न केवल स्वयं काव्य रचना की बल्कि अनेक कवियों को भी अपने दरबार में आश्रय दिया। कवियों में ग्रंथों का चयन :

गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ के अनुसार इन कवियों की संख्या 52 थी-

बावन कवि हुजूर गुर रहित सदा ही पास।

आवै जाहिं अनेक ही कहि जस, लें धन रासी ।। 1।।

तिन कवियन बाणी रची लिहि कागद तुलवाई।

नो मन होए टोल महीं सूखम लिखत लिखाई।।2।।

विद्याधर सिस ग्रन्थ को नाम धरयो करि प्रीत। नाना विधि कबिता रची रखि रखि नौ रस नीति ।। 3।।

मच्यो जंग गुरु संग रह्यो ग्रन्थ सो बीच। निकसे आनंदपुरि तज्यो लुट्यो पुन मिली नीच।।4।।

प्रथक प्रथक पत्रे हुते लूट्यो सु ग्रन्थ बिखेर।

इक थल रह्यो न, आईएम गयो जिसते मिल्यो न फेर ।। 5।।

वाहठ पन्ने कहूँ ते रह ये आनंद पुरि माहि।

तिनते लिखे कवित्त इहु गुर जसु बरन्यों जाहिं।। 6।।'

अर्थात् इन 52 कवियों ने जो बाणी लिखी वह 'विद्याधर' नामक ग्रंथ में संग्रहित की और इस ग्रंथ का भार नौ मन था। यह ग्रंथ आनंदपुर संग्राम में नष्ट हो गया। ग्रंथकार ने गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ में दरबारी कवियों के 43 छंद उद्धृत किए हैं और इन कवियों की नामावली प्रस्तुत की है जो इस प्रकार है-

कवि	उपलब्ध रचना
1. उदय राय	... ...
2. अनी राय	जंग नामा गुरु गोबिंद सिंह
3. अमृतराय	चित्र विलास-सभा पर्व महाभारत (भाषा रूपांतरण) और फुटकर छंद
4. अल्लू	
5. आशा सिंह	फुटकर
6. आलम	श्याम स्नेही, आलम केलि, माधवानल कामकंदला, सुधामा चरित, ग्रंथ संजीवन, फुटकर
7. ईश्वरदास	फुटकर छंद
8. सुखदेव	अध्यात्म प्रकाश, ज्ञान प्रकाश, गुरु महिमा, सामुद्रिक शास्त्र
9. सुखा सिंह	
10. सुखिया	
11. सुदामा	फुटकर छंद
12. सेनापति	गुरु शोभा, चाणक्य नीति, सुखसैन ग्रंथ
13. श्याम	
14. हुसैन अली	फुटकर छंद
15. हीर	फुटकर छंद
16. हंसराम कर्ण	पर्व (महाभारत भाषा रूपांतरण) फुटकर छंद
17. कल्लू	
18. कुमरेश द्रोण	पर्व (महाभारत भाषा रूपांतरण)
19. खानचंद	
20. गुनिया	
21. गुरु दास	कथा हीर रांझा की साक्षी हीरा घाट की
22. गोपाल	अनुभव उल्लास
23. चंदन	फुटकर छंद
24. चंदा	फुटकर छंद
25. जमाल	
26. टेकन	अश्वमेघ पर्व महाभारत (भाषा रूपांतरण)
27. धर्म सिंह	पंचतंत्र, कोकसर
28. धन्ना सिंह	फुटकर छंद
29. ध्यान सिंह	फुटकर छंद
30. नानू	फुटकर छंद
31. निश्चल दास	
32. निहालचंद	
33. नंदराम अथवा नंद सिंह	नंदराम पचीसी, कड़वा
34. नंदलाल	दीवाने ए गाथा, जिंदगीनामा, तौ सौ फौसना, जोत विकास, गंजनामा (पंजाबी)
35. पिंडी दास	
36. वल्लभ	
37. बल्लू	
38. विधि चंद	
39. बृष	
40. बुलंद	फुटकर छंद
41. बृजलाल	फुटकर छंद
42. मथुरा	
43. मदन सिंह	
44. मदन गिरी	
45. भल्लू	
46. मल्लू	
47. माला सिंह	
48. मंगल शल्य	पर्व महाभारत (भाषा रूपांतरण), फुटकर छंद
49. राम	
50. रावल	
51. रोशन सिंह	
52. लखन राय	हितोपदेश भाषा[2]

इस ग्रंथ के संपादक भाई वीर सिंह ने टिप्पणी करते हुए कवियों की इस सूची में 7 नाम और जोड़ दिए हैं यह नाम हैं अचलदास, जमाल, बुलंद, मथुरा, बल्लू, गोपाल और मदन सिंह। इस प्रकार उन्होंने 52 के स्थान पर 59 संख्या निर्धारित की है।'

ज्ञानी ज्ञान सिंह ने यह संख्या 61 मानी है और 52 कवियों के अतिरिक्त नाम इस सूची में सम्मिलित होते हैं-

1. मद्ध 2. रामदास 3. सेना 4. सेखा 5. रामचंद 6. मानीं 7. सुन्दर 8. जान 9. ठाकुर।

इन सूचियों के अतिरिक्त भी कई सूचियाँ प्राप्त होती हैं। थोड़े बहुत फेरबदल के साथ परन्तु साहित्य जगत में सर्वाधिक मान्यता गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ में दी गई सूची को प्राप्त है। इसीलिए इस सूची का प्रस्तुतकर्ता 24 कवियों की रचनाओं का नमूना प्रस्तुत नहीं कर सका। भाई वीर सिंह की सूची में से छह कवि (सुक्खू, सोहन, दयाल सिंह, मद्ध, मानचंद, अचलदास) और ज्ञानी ज्ञान सिंह की सूची में से पाँच कवि (मानी, रामदास, जान, ठाकुर, सेखा) कवियों की रचनाएँ उपलब्ध नहीं है। डॉ. भारत भूषण चौधरी ने 33 कवियों की एक सूची प्रस्तुत की है जो उनके अनुसार निर्विवाद रूप से दशम गुरु के दरबारी कवि थे-

	कवि	रचनाएँ
1.	अणीराय	
2.	अमृतरायचित्र	विलास, सभा पर्व महाभारत (भाषा रूपांतरण) और फुटकर छंद
3.	आलम	श्याम स्नेही, आलम केलि, माधवानल कामकंदला, सुदामा चरित, ग्रंथ संजीवन, फुटकर
4.	ईश्वरदास	फुटकर छंद
5.	सुखदेव	अध्यात्म प्रकाश, ज्ञान प्रकाश, गुरु महिमा, सामुद्रिक शास्त्र
6.	सुदामा	फुटकर छंद
7.	सेनापतिगुरु शोभा,	चाणक्य नीति, सुखसैन ग्रंथ
8.	हीर	फुटकर छंद
9.	हुसैन अली	फुटकर छंद
10.	हंसरामकर्ण	पर्व (महाभारत), फुटकर छंद
11.	कुवरेश द्रोण	पर्व (महाभारत)
12.	गुरुदास	कथा हीर रांझा की साक्षी हीरा घाट की
13.	गोपाल	अनुभव उल्लास
14.	चन्दन	फुटकर छंद
15.	चंद	अथवा चंदा फुटकर छंद
16.	टहकन	अश्वमेघ भाषा (महाभारत), रतनदास
17.	धर्म सिंह	पंचतंत्र और कोकसार
18.	धन्ना सिंह	फुटकर छंद
19.	ध्यान सिंह	फुटकर छंद
20.	नन्द सिंह	नंदराम पचीसी, कड़खा गुरु गोबिंद सिंह
21.	बृज लाल	फुटकर छंद
22.	भल्लू या भल्ल भट्ट	फुटकर छंद
23.	मंगल शल्य	पर्व (महाभारत), फुटकर छंद
24.	लक्खण	हितोपदेश भाषा
25.	रामचंद	कथा नल दमयन्ती की, वैद्य विनोद
26.	सुन्दर	फुटकर छंद
27.	सारदा (शारदा)	फुटकर छंद
28.	काशीराम	कनक मंजरी, परशुराम संवाद, पांडवगीता, सिहरफी, बारहमासा और कुछ फुटकर कवित्त
29.	नानू या ननुआ	फुटकर छंद
30.	सैना या सैणा	फुटकर छंद
31.	आसा सिंह	फुटकर छंद
32.	सुकवि	फुटकर छंद
33.	भूपति	फुटकर छंद।[6]

परन्तु लेखक अगले ही पृ. पर विरोधी धारणा प्रस्तुत करता है-हमें हुसैन, अली, नन्द सिंह, मल्ल भट्ट, ईश्वरदास, ध्यान सिंह तथा बृज लाल आदि छ कवियों की कोई भी कृति उपलब्ध नहीं हो सकी... इस प्रकार 25 कवि ऐसे बचते हैं जिनकी फुटकर या ग्रन्थ रूप में कृतियाँ इस समय उपलब्ध हैं।

डॉ. देवेन्द्र सिंह विद्यार्थी ने एक शोध पत्र में 52 कवियों, ज्ञानी ज्ञान सिंह द्वारा गिनाए नौ कवियों, भाई वीर सिंह द्वारा गिनाए गए साथ कवियों के अतिरिक्त छः नाम पिछले दिनों खोज से मिले बताए हैं-1. कंकन 2. कांसीराम 3. प्रहलाद 4. भूपति 5. सारदा 6. सुकवि। दो नाम और भी इस सूची में जमा है-1. वृन्द कवि 2. जनदयाल या दयालदास ।'

वस्तुतः यह निर्णय करना कठिन है कि गुरु गोबिंद सिंह के दरबार में कवियों की संख्या कितनी थी। क्योंकि कई कवि मात्र समस्यापूर्ति तक ही सीमित रहें और कई जिन्होंने लिखा लेकिन काल की गर्त में खो गए. जिससे उनकी काव्य कृति आज हमें प्राप्त नहीं। लेकिन एक बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि गुरु जी जैसे महान संस्कृति-चेता के दरबार में अनेक कवि अस्थाई रूप से रहते होंगे और अनेक समय समय पर आते जाते रहते होंगे। गुरु जी के दरबार में कवियों की भारी संख्या इसलिए भी रही होगी क्योंकि उसी काल में औरंगजेब ने दिल्ली से हिंदी कवियों को निष्कासित कर दिया था। इन कवियों के लिए दशम गुरु के दरबार में बढ़कर बढ़िया शरण स्थल क्या हो सकता था। हम पूर्ण दावे से इन दरबारी कवियों की संख्या निर्धारित न करते हुए केवल उन कवियों का वर्णन यहाँ कर सकते हैं जिनकी रचनाएँ आज भी प्राप्त है। ये कवि हैं-

1. फुटकर काव्य रचने वाले आसा सिंह, चंदन, चंद चंदा, धन्ना सिंह, नानू या ननुआ. भूपति सारदा (शारदा)। शारदा, सुकवि, सुंदर, सुदामा, सेना-सेणा, हीर और

2. कुवरेश, गुरुदास, गोपाल, टहकन, नंदराम, मंगल, लक्खण, सुखदेव, सेनापति, हंसराज। यहाँ इन कवियों व उनके ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है-

प्रबंध काव्य प्रणेता-अणीराय, अमृतराय, आलम, काशीराम,

कतिपय फुटकर काव्य रचने वाले कवि :

1. आसा सिंह :

गुरु-शब्द-रत्नाकर के प्रणेता काहन सिंह के अनुसार-यह दशमेश का मुत्सद्दी था। एक बार इसने एक गरीब सिक्ख के उपकारार्थ 500-500 रुपये की रसीद सिक्ख पर काट दी। प्रेमी सिक्ख ने रकम अदा कर दी। जब रसीद दशमेश के समक्ष पेश हुई तब महाराज नाराज हुए और फरमाया कि बिना हुकुम रसीद क्यों लिखी? आसा सिंह डरकर रात को भाग गया और एक पोही लिख कर भेजा-

मुख कारा मेरो करै करत न परउपकार।

तिस को मैं फिर करोंगी पलटा इस दरबार।

-इस प्रकार दशमेश ने बुला कर फिर उसी स्थान पर कायम कर दिया। 8 भाई वीर सिंह ने कलगीधर चमत्कार में भाई सुक्खा सिंह के हवाले से उनके पद उद्धृत किए हैं। भाई संतोष सिंह ने गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ में आसा सिंह के नाम से छंद दिए हैं।

2. चंदन

हिंदी साहित्येतिहासों में इनसे संबंधित कुछ भी सामग्री नहीं मिलती। गुरु शब्द-रत्नाकर कार ने इन्हें दशमेश के दरबारी कवि माना है। भाई संतोख सिंह ने गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ में इनका एक छंद उद्धरित किया है- नवसात तिये, नवसात किये, नवसात पिये, नवसात पियाए। नवसात रचे, नवसातबदे, नवसात पया

पहि दायक पाए। जीत कला नवसातन की, नवसातन के मुख अंघर छाए। मानहु मेघ के मंडल में कवि चन्दन चंद कलेवर छाए।।"

चंद चंदा :

डॉ. भारत भूषण चौधरी ने इन्हें फुटकर काव्य का रचयिता" माना है। जबकि डॉ. मनमोहन सहगल के अनुसार गुरु जी के आदेशानुसार चंद ने पहले कर्ण पर्व (महाभारत) और बाद में उद्यम पर्व का भाषा अनुवाद किया। ... दो अन्य रचनाएँ उपलब्ध हैं-प्रीक्षा (परीक्षा) गुरु गोबिंद सिंह तथा त्रिया चरित्र। गुरु महिमा संबंधी कुछ फुटकर पद भी इस कवि के प्राप्त होते हैं। " "त्रियाचरित्र' नामक कृति सिक्ख रेफ्रेंस पुस्तकालय, अमृतसर में अब भी प्राप्त है। इसका नंबर 6118 है और यह खंडित प्रति जोगी नामा ते त्रियाचरित्र नाम से संकलित है।

धन्ना सिंह :

गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ की रुत 5 अंश 26 में एक प्रसंग है कि एक बार गुरु जी के दरबार में चंदन नाम का एक कवि आया। उसने घमंड के कारण गुरुजी के दरबारी कवियों को एक समय की व्याख्या करने की चुनौती दी। गुरुजी ने उत्सव आइए का अर्थ जिस घासी से करवाया वहीं कभी धन्ना सिंह था बाद में धन्ना सिंह ने चंदन के सामने दो सवैये पड़े जिन का अर्थ चंदन न कर सका और पराजित हो गया। " क्रमांक 2 पर जिस कवि का परिचय दिया है यह वही चंदन है।

नानू या ननुवा :

यह नौवें गुरु तेगबहादुर के काल में दरबार आए। कुछ समय लाहौर में गदा नारायणी नामक सूफी के संपर्क में रहे। कलगीघर चमत्कार में इनके कुछ पद उद्धृत हैं।

भूपति :

इनके बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। केवल गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ में इनका एक छंद उद्धत है। "

सारदा (शारदा) :

इनका जीवन परिचय भी प्राप्त नहीं होता है। गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ में इनके छंद उद्धृत हैं, जिसमें गुरु जी की छड़ी की तुलना कृष्ण की बांसुरी से की गई है-

कुंज-कुंज मलिनी बजाई बन बांसुरी जी, उनही के संग कोई शारदा कहती है

कान्ह हवै औतरयो तो हाथ ही रहत है,

गोविंद हवे और तरह वो तो हाथ ही रहते ।। 13॥ "

सुकवि :

इनका भी एक छंद गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ में उद्धत है।

सुंदर :

जन्म मृत्यु का ब्यौरा तो प्राप्त नहीं है। कुछ फुटकर छंद इनके मिलते हैं, जिनके कारण यह गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि माने जाते हैं। 'कलगीधर चमत्कार' में इनके छंद प्राप्त होते हैं।

सुदामा :

भाई काहन सिंह ने इन्हें बुंदेलखंड का निवासी माना है।" और इनकी रचना का उदाहरण भी दिया है। काशी नागरी प्रचारिणी सभा की सूची में ग्रंथ सं। 736/ 534 पर एक हस्तलिखित प्रति सुदामा जी की बारह खड़ी विद्यमान है, जो साधारण कोटि की है और पंजाबी प्रभाव इस पर काफी है।

सेना :

ये गुरु गोबिंद सिंह के दरबार में लिपिक का कार्य करते थे और बहुत सुंदर अक्षर लिखते थे। इनके कुछेक फुटकर छंद वंशावली नामा की (केसर सिंह छिब्बर), गुरुपद प्रेम प्रकाश (बाबा सुमेर सिंह) और गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ में मिलते हैं।

हीर :

दशमेश दरबार के फुटकर-काव्य रचनाओं में हीर का नाम विशेष उल्लेखनीय है क्योंकि यह एकमात्र ऐसे कवि हैं जिनके कुछ छंद उपलब्ध हैं। कलगीधर चमत्कार में इनके नाम से 13 कवित और एक छप्पय मिलता है। इसके अतिरिक्त 7 कवित्त, एक सवैया और एक छप्पय बिना नाम से है। इसी ग्रंथ से यह संकेत भी मिलता है ये खालसा साजने के उपरांत इस दरबार त्रय में आए थे। इनके कवित्त वीर रस पूर्ण है और भूषण कवि से समानता रखते हैं।

प्रबंध काव्यकार:

अणीराय :

अणीराय ने भी अपने बारे में कोई विवरण नहीं दिया सिवाय इसके कि वे जब गुरु जी से मिले और आशीष दिया तो गुरुजी ने उन्हें नग, कंचन, भूषण से नवाजा था-

अनीराय गुरु से मिली दीनी ताही असीस

आउ कह्यो मुख आपने बहुर करी बखसीस ।। 10।।

नग, कंचन, भूषन बहुर, देने सतिगुर एह

नामा हुकम लिखाय के दिनों सरस स्नेह।। 2।। 19

कुछ विद्वानों का मत है कि गुरु हरगोबिंद के द्वितीय पुत्र अणीराय ही कवि अणीराय हैं-यदि अणीराय को गुरु हरगोबिंद का पुत्र स्वीकार कर लिया जाए (जन्म संवत 1675) तो रचना समय उनकी आयु 83 से 84 वर्ष रही होगी। इसके शीघ्र ही बाद उनकी मृत्यु हो गई होगी, इसलिए अन्य कोई रचनाएँ नहीं दे पाए। लेकिन चूँकि जंगनामा में कवि का गुरु जी से चाचा-भतीजा वाला संबंध नहीं प्राप्त होता बल्कि आश्रय-आश्रयदाता का संबंध दिखाई पड़ता है। अतः विद्वानों ने इन्हें गुरु गोबिंद का पुत्र मानने में संकोच किया है। हमारा विचार है कि यह छठें गुरु के पुत्र ही थे जो पिता की मृत्यु के उपरांत उपेक्षित हो गए होंगे और जब गुरु जी ने उन्हें बुलाकर सम्मान दिया और दूसरों को भी उनका सम्मान करने का हुक्म दिया होगा तो हर उपेक्षित व्यक्ति की भांति वे में भी मान देने वाले के आश्रयी बन गए होंगे।

ग्रंथ: जंगनामा

यह 69 शब्दों का लघु वीर काव्य है. जिसमें गुरु गोबिंद सिंह और अजीम खां के मध्य हुए युद्ध का वर्णन है। भाषा पंजाबी और फारसी प्रभाव लिए हुए है।

अमृतराय :

महान कोष के कर्त्ता ने इन्हें लाहौर निवासी छैल राय भट्ट का पुत्र बताया है जिसने सतगुरु की आज्ञा से महाभारत के सभा पर्व का हिंदी अनुवाद किया है। " अंतः साक्ष्य से ज्ञात होता है कि इनका वास्तविक नाम चतुरदास था और ये बहल क्षत्रिय थे। " इनके तीन ग्रंथ और कुछ फुटकर छंद प्राप्त हुए हैं।

ग्रंथ : 1: नवरस

पंजाब के पुस्तकालयों में इसकी कोई प्रति नहीं मिलती।

चित्रविलासः

यह अलंकार से संबंधित ग्रंथ है जिसमें चित्रालंकार का महत्व स्थापित किया गया है। डॉ. सहगल के शब्दों में चित्रलंकार में शब्दों और वर्गों को ऐसे चित्र में ढंग से प्रस्तुत किया जाता है कि काव्य में चमत्कार उत्पन्न हो जाता है। 24 श्री प्यारा सिंह पदम के संपादन में 'पंचनद' की भाषा विभाग, पंजाब ने प्रकाशित करवाया है।

महाभारत का सभा पर्व :

यह महाभारत की सभा पर्व का भाषा रूपांतर है और इसमें 81 अध्याय हैं। यह ग्रंथ अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ।

कुछ फुटकर कवित्त 'गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ', 'कलगीधर चमत्कार' में संकलित है।

आलम :

आलम नाम के एक से अधिक कवियों का परिचय हिंदी साहित्येतिहासों में मिलता है। आचार्य शुक्ल ने आलम के दो कवियों का उल्लेख किया है एक वह जो 991 हिजरी में हुआ जबकि अकबर का राज्य था उसने 'माधवानल कामकंदला' नामक प्रेम-काव्य लिखा, दूसरा 'आलम' शहजादा मुअज्जम के दरबार हुआ, जो जाति का ब्राह्मण था।" भाई काहन सिंह ने आलम नाम के तीन कवियों का उल्लेख किया है।" डॉ. बलवीर सिंह ने माधवानल कामकंदला चरित में आलम के जीवन की अनुमानित सूची दी है, जो इस प्रकार है:

ईस्वी सन्	विक्रमी सवंत	विवरण
1633	1690	अनुमानता आलम का जन्म काल।
4-10-1643	1700	मुअज्जम का जन्मकाल।
1653-54	1710-11	आलम शेख का प्रणय, विवाह, धर्म परिवर्तन।
1655	1712	श्याम-सनेही की रचना समाप्ति के काल।
1617	1717	श्याम-सनेही की प्रथम प्रतिलिपि का काल।
1687	1744	गोलाकोंडा विजय, मुअज्जम की कैद, आलम और शेख का पलायन।
1688	1745	दशम गुरु के दरबार में शेख द्वारा प्रशस्ति कवित्त की रचना।
1688	1745	मंगल, आलम आदि कवियों द्वारा प्रशस्ति कवित्त रचना, हुसैनी युद्ध की कवित्त की रचना, हुसैनी युद्ध की समाप्ति।
1695	1752	मुअज्जम की कैद-मुक्ति और पंजाब-सिंध के सूबेदार पद की प्राप्ति।
1696	1753	गुरु गोबिंद सिंह के चरित्रोपाख्यान की पूर्ति, माधवानल-कामकंदला की रचना।
1698	1755	दशम गुरुद्वारा कवियों को विदा देना।
1698	1755	आलम और शेख का मुअज्जम के पास पुन: जाना, मुअज्जम की प्रशस्ति का कवित्त।
1705	1762	अनुमानित: आलम का मृत्यु काल।
1717	1774	माधवानल-कामकंदला की प्रथम प्रतिलिपि का काल।

अतः मुअज्जम और दशम गुरु के दरबार के कवि आलम दो नहीं एक ही थे।

ग्रंथ (1) माधवानल-कामकंदला

दोहा चौपाई में लिखा गया एक प्रेम-काव्य है। हस्तलिखित प्रति एस.आर.एल. में नं. 1562 की छोटी-सी प्रति के 26 से 102 पृ. तक प्राप्त है। साथ में दशमेश के दरबारी कवियों की लिखते, सांझा, सूररंभावत, अंग फुरने के फल, तिलुसतत आदि संकलित है।

2. श्याम-स्नेही :

यह मौलिकता युक्त पौराणिक प्रबंध है जिसमें कृष्ण और रूक्मिणी के विवाह की कथा है।

3. आलम-केलि

इसमें मुक्तक कवित्त हैं।

4. सुदामा चरित्र

सुदामा और कृष्ण की कथा है।

5. ग्रंथ संजीवन

यह वैद्य ग्रंथ है।

कुछ और मुक्त रचनाएँ भी हैं।

काशीराम

ये जाति की कायस्थ थे और औरंगजेब के सूबेदार निजामत खां के आश्रित कवि थे। सरोज में इनका जन्म संवत 1725 दिया गया है। पांडव गीता के अंतः साक्ष्य से ज्ञात होता है कि

1. यह रचना संवत 1745 में आरंभ की गई सत्र सै संतालीए, हाड़ वदी करी वार।। ।।।

2. यह गुरु आज्ञा से रची गई-

गुरु गोबिंद की दया से कछु इहै बनाई। काशी कथा सहसक्रित, भाखिआ करि गाई।। 2।।

3. गुरु दरबार के अन्य पंडित मिट्टू ने इन्हें संस्कृत के अनेकार्थ समझाएःथे-

मिट्टू दिज गोबिंदराइ, अरथ देंस दितोई.

'काशी' कही जैसी बुधि थी, दोष देहु न कोई ।। 78।।

4. 'पांडव गीता' महाभारत के शांति पर्व में आगत एक प्रसंग का भाषानुवाद है-

महाभारत में शांति इक परव है

तो मधे पांडवगीता जानो।। 28

इसमें पंजाबी के शब्दों का काफी मात्रा में प्रयोग किया गया है।

ग्रंथ : पांडवगीता

महाभारत के शांत पर्व का भाषा अनुवाद है।

2. कनक मंजरी

इसमें रतनपुर के किसी धनी व्यक्ति की पत्नी की प्रेम-कथा शुक-शुकी संवाद के द्वारा कही गई है।

3. परशुराम संवाद

धनुष यज्ञ के उपरांत लौटते राम-लक्ष्मण की मार्ग में परशुराम से हुई भेंट का इसमें वर्णन है।

4. कवित्त काशीराम फुटकर

5-6 सीहरफी और बाराहमाह पंजाबी में है।

5. कुवरेश

इन्हें हिंदी के प्रसिद्ध आचार्य कवि केशवदास का पुत्र माना गया है। गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ से प्रकट होता है कि औरंगजेब इन्हें मुसलमान बनाना चाहता था लेकिन कुवरेश भाग कर किसी तरह आनंदपुर आ गया और गुरुजी ने उन्हें आदरपूर्वक अपनी शरण में ले लिया। केशवदास के वंशजों ने जो वंशवृक्ष तैयार किया है उसमें इनका नाम नहीं है लेकिन डॉ. भारत भूषण चौधरी के अनुसार-केशव का प्रकाशित वंशवृक्ष भ्रमपूर्ण प्रतीत होता है।"

ग्रंथ :

'द्रोण पर्व' का भाषा रूपांतर इनकी एक मात्र उपलब्ध रचना है जो 1752 में लिखी गई।

6. गुरुदास

साहित्य जगत में गुरुदास नाम के एकाधिक कवि हुए हैं। गुरु जी के दरबारी कवि गुरुदास के बारे में भी पर्याप्त विवाद रहा है कि क्या यह वही गुरुदास कवि है, जिसने 'कथा हीर रांझन की' नामक ग्रंथ लिखा है और औरंगजेब की प्रशस्ति गाई है या औरंगजेब का दरबारी कवि गुरुदास दास और दशमेश का दरबारी कवि गुरुदास अलग-अलग है। लेकिन अब यह माना जाने लगा है कि वस्तुतः गुरुदास ने जब कथा हीर रांझा की (1725 विक्रमी) लिखी तब वह औरंगजेब के दरबार में थे और बाद में जब गुरुजी विद्वानों और कवियों को अपने दरबार में आमंत्रित किया तो ये वहाँ से चले आए और साखी हीरा घाट की रचना की जो दशम गुरु चमत्कार से संबंधित है।

ग्रंथ एककथा हीर रांझा की

यह भाषा विभाग पंजाब, पटियाला से प्रकाशित हो चुकी है एक प्रेम कथा है।

2. साखी हीरा घाट की

यह अप्रकाशित है और दशमेश के चमत्कार से संबंधित है।

7. गोपाल

गोपाल नाम के भी हिंदी साहित्य जगत में एकाधिक कवि हुए हैं जैसे गोपाल भट्ट, गोपाल लाहौरी। श्री देवेंद्र सिंह गोपाल लाहौरी को गुरुजी का दरबारी कवि मानते हैं, बो... लाहौर के रहने वाले थे। गुरु दरबार में आने से पूर्व रीति तत्त्व दर्शक एक रचना 'रसविलास नामक कथित है। गुरु दरबार में इनकी छोटी-सी रचना अनुभव-उल्लास मिलती है। एक और रचना 'कृष्ण रुक्मणी री बेली' की टीका इनकी बनाई राजस्थान में बताई गई है।" लेकिन भारत भूषण चौधरी और डॉ. मनमोहन सहगल इस मत को अस्वीकार करते हुए गोपाल भट्ट को गुरुजी का दरबारी कवि मानते हैं। डॉ. चौधरी के अनुसार अनुभव उल्लास उनकी एकमात्र रचना है।" लेकिन डॉ. मनमोहन सहगल ने इनकी दो रचनाएँ स्वीकारी हैं-मोहमरद राजे की कथा तथा अनुभव उल्लास।" ये गोकुल के रहने वाले थे और इनकी दोनों रचनाओं में गुरुजी का उल्लेख मिलता है।

ग्रंथ एकः मोहमरद राजे की कथा

इसमें 112 छंदों में साधु शिक्षाएँ एवं सत्संगति के गौरव की प्रस्तुति की गई है।

2. अनुभव उल्लास

डॉ. सहगल के अनुसार 3534 और डॉ. चौधरी के अनुसार" 19 रोला छंदों की छोटी-सी रचना है जिसका लक्ष्य तत्वज्ञान की शिक्षा देना है।

टहकन :

टहकन की किसी भी रचना से यह प्रमाणित नहीं होता कि वे दशम गुरु के दरबारी कवि थे। गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ में दी गई सूची में इनका नाम आता है। इसी आधार पर इन्हें गुरुजी का दरबारी कवि माना जाता है। अंतःसाक्ष्य से ज्ञात होता है कि ये जलालपुर के वासी, क्षत्रिय तथा कृष्ण उपासक थे। पिता का नाम रंगीलदास चोपड़ा क्षत्रिय था। कवि पहले सिपाही बना और वहीं 'अश्वमेघ पर्व' का भाषानुवाद किया। पहले उन्होंने संस्कृत श्लोकों को सुना, तत्पश्चात इस शुभ बाणी का चौपाई दोहा में अनुवाद किया।" इस रचना का काल इसी में संवत 1726 दिया है अर्थात् वह समय जब दशमेश सिर्फ बरस के थे। अतः विद्वानों का मत है कि टहकन के अनुवाद कार्य की प्रेरणा से ही दशम गुरु ने अनुवाद कार्य आरंभ करवाया था-जब टहकन गुरु दरबार में पहुँचे होंगे तो उनके अश्वमेघ पर्व को देखकर ही महाभारत के भाषा रूपांतरण को आदर्श मान कर ही अपने कार्य को संपन्न किया।"

ग्रंथः

1. अश्वमेघ पर्व का भाषा रूपांतर

2. रतनदास-रीति ग्रंथ परंपरा का ग्रंथ

ये दोनों ग्रंथ सिख रेफरेंस पुस्तकालय, अमृतसर में क्रमशः 124, 264 और 6384 नंबर पर उपलब्ध है।

3. 4-5 मोरध्वज चंद्रहास की कथा, सूरज स्रोत, लवकुश कथा, जो प्राप्त नहीं है।

नंदरामः

इनके पिता बलीराम उत्तम कवि तथा फारसी, हिंदी, पंजाबी के ज्ञाता थे। ये जाति के वैश्य और अंबावती के रहने वाले थे। 38 चौधरी ने इनकी रचना को उपलब्ध नहीं माना, लेकिन इनकी दो रचनाएँ अब भी उपलब्ध है-

ग्रन्थ :

1. नंदराम पचीसी : इसमें कलियुग का वर्णन है।

2. केड़खा गुरु गोबिंद सिंह इसमें दशमेश के भंगाणी से चमकौर तक के युद्धों का वर्णन है। प्यारा सिंह पदम ने इसे सेनापति की कृति" माना है। यह कृति सिक्ख रेफ्रेंस पुस्तकालय में पांडुलिपि रूप में नं. 3547 पर उपलब्ध है।

मंगल :

इनका जन्म-विवरण भी अनुपलब्ध है। हिंदी के अतिरिक्त पहाड़ी और पंजाबी में भी लिखने के कारण चंद्रकांत बाली का मत है-आपको कांगड़ा निवासी या हिमाचल निवासी सहज में माना जा सकता है। लेकिन डॉ. बलवीर सिंह ने मंगल कवि द्वारा लिखित एक पत्र के द्वारा सिद्ध किया है कि पसरूर (सियालकोट) के निवासी एवं पंजाबी थे, कांगड़ा या हिमाचल प्रदेश के निवासी नहीं।"

ग्रन्थ

1. शल्य पर्व का भाषारूपान्तर

2. मुक्तक रचनाएँ

लक्खण राई (राय) :

इसके पिता का नाम बीक चंद था और यह चचागर गोत्र के राजपूत है। ये अपने भाई भोजराज के साथ गुरु दरबार में रहकर सेवा कार्य व भक्ति करते थे। ये ऊना के निवासी थे। इन्होंने महाभारत के किसी पर्व का अनुवाद नहीं किया जिससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इस बीच इनकी मृत्यु हो चुकी थी।

ग्रंथ : हितोपदेश भाषा

सुखदेव

इस नाम के भी एकाधिक कभी हुए हैं। गुरु जी के दरबार में भी सुखदेव, सुक्खा और सुखिया नाम से तीन कवियों का उल्लेख होता है, जो वास्तव में एक ही हैं। आप संस्कृत के ज्ञाता व साधु वृत्ति के व्यक्ति थे। इनका रचनाकाल संवत 1775 के आसपास ठहराया जाता है।

ग्रंथ :

1. अध्यात्म प्रकाश

2. ज्ञान प्रकाश

3. गुरु महिमा

4. सामुद्रिक शास्त्र (असाहित्यिक)

सेनापति :

सेनापति ने 'सुखसैन' नामक ग्रंथ में जिसका उन्होंने अनुवाद किया था. में अपना वास्तविक नाम चंद्रसेन बताया है। गुरु दरबार का सर्वाधिक प्रामाणिक कवि है, जिसकी तीन रचनाएँ-गुरु शोभा, चाणक्य नीति, भाषा व सुखसैन ग्रंथ उपलब्ध हैं। बाहाः साक्ष्य से इस कवि के संबंध में भी बहुत सामग्री नहीं मिलती। सुखसैन ग्रंथ में कवि ने अपने वंश का वर्णन किया है जिसके अनुसार कवि लाहौर का निवासी जाट वंश के मान गोत्र के बालचंद्र का पुत्र ठहरता है, जिसके विद्या गुरु देवीदास नामक श्रेष्ठ कवि थे। इन्हें गुरु दरबार में सम्मान प्राप्त था और जगतराय नामक अपने मित्र के कहने पर इन्होंने इस ग्रंथ का भाषानुवाद किया था। बाद में यह वजीराबाद में ही रहने लगे।

ग्रंथः गुरु शोभा

यह सेनापति की मौलिक रचना है जिसमें कवि ने अपने आश्रयदाता गुरु गोबिंद सिंह के ऐतिहासिक व्यक्तित्व का चित्रण किया है।

2. चाणक्य नीति भाषा: यहाँ अनूदित ग्रंथ संस्कृत मूल का भाषारूपांतर है।

3. सुखसैन ग्रंथ: यह वैद्यक ग्रंथ 'राम विनोद' का अनुवाद है।

हंसराम

इनका भी जीवन परिचय प्राप्त नहीं है। कहा जाता है कि पटियाला दरबार के कवि चंद्रशेखर के परमपितामह थे। लेकिन यह निश्चित नहीं है। गुरुजी ने इन्हें कर्ण पर्व की भाषारूपांतर का कार्य सौंपा था।

ग्रंथ :

1. कर्ण पर्व का भाषारूपांतर जिसके 93 अध्याय हैं।

2. गुरु प्रताप सूर्य ग्रंथ में उद्धृत मुक्तक।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विवेचन के पश्चात् हम निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त करते हैं-

1. गुरु गोबिंद सिंह का दरबार विद्वान कवियों से भरा हुआ था।

2. यद्यपि मध्यकाल को हम भारत के इतिहास लेखन की शुरुआत का काल मानते हैं तथापि गुरु गोबिंद सिंह जैसे जागरूक नेता से दरबारी कवियों ने भी अपना परिचय देने की आवश्यकता महसूस नहीं की. जो आज हमारे इतिहास लेखन में महत्त्वपूर्ण कड़ी का कार्य करते। 3. ऊपर जिन कवियों कृतियों का विवेचन किया गया है वह यह संकेत देना है कि ऐसे ही और भी बहुत से कवि व कृतियाँ होंगी जो वक्त के साथ-साथ लुप्त हो गई होंगी। 4. ये कवि रीतिकाल जो लक्षण और रीति ग्रंथों के प्रधान का

काल था, के होते हुए भी एक विशेष अलगाव और मर्यादा अपने जीवन में प्रतिबिंबित करते हैं। ये विशिष्ट होने के साथ ही महत्त्वपूर्ण भी हो जाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. सन्तोख सिंह : गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ, पू. 5725

2. सन्तोख सिंह: गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्ध, पू. 5725

3. सन्तोख सिंह: गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ, पू. 5725

4. ज्ञान सिंह: पंथ प्रकाश, पृष्ठ-315-17

5. भारत भूषण चौधरी: गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, पृष्ठ-65-66

6. भारत भूषण चौधरी: गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, पृष्ठ-67 हिंदी साहित्य की देन (शोध पत्र) पृष्ठ-19

7. देवेन्द्र सिंह विद्यार्थी रीति और नीति के क्षेत्र में पटियाला दरबार की हिंदी साहित्य की देन (शोध पत्र) पृष्ठ-19

8. कान्ह सिंह : गुरु शब्द रत्नाकर महान कोश, पृष्ठ-69

9. वीर सिंह : कलगीधर चमत्कार, पृष्ठ-467-68

10. कान्ह सिंह : गुरु शब्द रत्नाकर महान कोश, पृष्ठ-360

11. भारत भूषण चौधरी गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, पृष्ठ-65-66

12. मनमोहन सहगल पंजाबी का हिंदी साहित्य, पृष्ठ-92

13. सन्तोख सिंह : गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ, पृ. 5767

14. सन्तोख सिंह : गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ, पृ. 5721

15. सन्तोख सिंह : गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ, पृ. 5728

16. वीर सिंह : कलगीधर चमत्कार, पृष्ठ-478-79

17. काहन सिंह : गुरु शब्द रत्नाकर महान कोश, पृष्ठ-160

18. वीर सिंह : कलगीधर चमत्कार, पृष्ठ-484-490, 492-502

19. शमशेर सिंह अशोक (संपादक) जंगनामा गुरु गोबिंद प्राचीन जंगनामे, पृष्ठ-17

20. मनमोहन सहगल पंजाबी का हिंदी साहित्य, पृष्ठ-76

21. चंद्रकांत बाली : पंजाब प्रांतीय हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-298-99

22. काहन सिंह : गुरु शब्द रत्नाकर महान कोश, पृष्ठ-59

23. अमृतराय : चित्र विलास हस्तलिखित

24. मनमोहन सहगल पंजाबी का हिंदी साहित्य, पृष्ठ-73

25. रामचंद्र शुक्ल : हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-224

26. काहन सिंह : गुरु शब्द रत्नाकर महान कोश, पृष्ठ-79

27. भारत भूषण चौधरी गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, पृष्ठ-97

28. सन्तोख सिंह : गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ, पृष्ठ-4910-11

29. भारत भूषण चौधरी गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, पृष्ठ-114

30. भारत भूषण चौधरी गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, पृष्ठ-13

31. भारत भूषण चौधरी गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, पृष्ठ-13

32. मनमोहन सहगल पंजाबी का हिंदी साहित्य, पृष्ठ-97

33. मनमोहन सहगल पंजाबी का हिंदी साहित्य, पृष्ठ-97

34. भारत भूषण चौधरी गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, पृष्ठ-120

35. टहकन : जैमिनीय अश्वमेघ, हस्तलिखित

36. भारत भूषण चौधरी : गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, पृष्ठ-122

37. मनमोहन सहगल पंजाबी का हिंदी साहित्य, पृष्ठ-69

38. प्यारा सिंह पदम्, विद्या सागर: ग्रन्थ श्री गुरु गोबिंद सिंह जी, पृष्ठ-218

39. चंद्रकांत बाली : पंजाब प्रांतीय हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ-365

40. भारत भूषण चौधरी गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, पृष्ठ-125

41. लक्खन राय : हितोपदेश, हस्तलिखित छंद 9-12, 331-34

42. सन्तोख सिंह : गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ, पृ. 5720

43. सन्तोख सिंह : गुरु प्रताप सूर्य ग्रन्थ, पू.